शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
10 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

शिक्षा व्यवस्था व सुधार

डॉ0 दिनेश कुमार
असि0 प्रोफे0, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
हल्द्वानी, उत्तराखण्ड
Email : dinekumar@uau.ac.in

_सारांश_

मानव संसाधन विकास मंत्रालय प्राईमरी और जूनियर स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता परखने के लिए 2018 से राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे (एन.ए.एस) परीक्षा आयोजित कर रहा है। प्रदेश के सभी विकासखण्डों में नमूने के आधार पर चयनित सरकारी स्कूलों में तीसरी,पांचवी और आठवीं कक्षा के विधार्थियों की परीक्षा हुई। डाइट की ओर से सर्वेयर विद्यार्थियों का चुनाव कर परीक्षा करायी गई। परीक्षा के परिणाम से तैयार हुई रिपोर्ट के आधार मंत्रालय शिक्षा सुधार के लिए मंत्रालय योजना तैयार करेगा। मूल्यांकन के आधार पर राज्य को रैंक दी जाएगी जिस राज्य की रैंक कमजोर होगी वहां के शिक्षा के सुधार के लिए मंत्रालय योजना तैयार करेगा लेकिन क्या हम शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर सुधार कर पाये है ? शिक्षक व छात्र अनुपात को सही कर पाये है। शिक्षा के सुधार करने के हमारे प्रयास कितने सफल हो पाये इन सब बिन्दु पर एक नजर डालने की आवश्यकता है।

प्रस्तावना

हमारा देश सन् 1947 को आजाद हो गया था। उसके बाद भारत के लिए एक संविधान निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी जिसके आधार पर भारत को डॉ भीमराव अम्बेडकर जी द्वारा निर्मित संविधान प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा है कि भारत के सभी नागरिक बिना किसी जाति, धर्म, लिंग, निवास, रंग के आधार पर भेदभाव किये हुए सभी बालकों को शिक्षा प्रदान करेगा। वर्ष 2009 से यह एक मौलिक अधिकार बन गया है। अब बच्चें के अभिभावक शिक्षा के अधिकार को प्रदान करने के लिए न्यायालय की भी शरण ले सकता है। भारत ने आजादी के बाद से अब तक शिक्षा के क्षेत्र में कितना विकास किया है। इस पर भी हमें गम्भीरता से जानना होगा, तभी हम अपने देश को आगे विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में खड़ा कर पायेगें। इन तथ्यों को जानने के लिए हमने कुछ साक्ष्यों के आधार पर भारत की स्थिति जानने का प्रसास किया है। साक्षरता के लिहाज से निश्चित रूप से आजादी के बाद भारत ने शिक्षा में काफी प्रगति की है पहले गणतंत्र दिवस के समय 16 प्रतिशत नागरिक साक्षर थे। आज यह आंकडा 74 प्रतिशत तक पहुंच गया है। सबसे ज्यादा सुधार महिला शिक्षा में आया है जो करीब 8 प्रतिशत से बढ़कर 65. 46 प्रतिशत हो गया है। इन सब आंकड़ों के बावजूद अब भी सुधार की बहुत आवश्यकता है। अपने आईआईटी और आईआईएम आदि पर हम चाहे जितना इठला ले, लेकिन दुनिया के 200 सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में हमारे किसी भी शिक्षण संस्थान का न हो पाना यह इंगित करता है

कि अभी शिक्षा में काफी काम करना है। समय समय पर जारी आंकडों के आधार पर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, योजना आयोग के अनुसार भारत में स्कूलों की संख्या को निम्न सारणी के आधार पर समझा जा सकता है।

भारत में स्कूलों की संख्या : तालिका – 1

वर्ष	प्राथमिक स्कूल	आठवीं तक	12वीं तक	कुल स्कूल
1951	2,09,700	13,600	7400	2,30,700
1981	4,94,500	1,18,600	51,600	6,64,700
2018	8,47,118	4,5,094	1,09,318	13,81,530

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, योजना आयोग के आंकड़ों के आधार पर।

देश की आबादी 1951 के 36.10 करोड़ से बढ़कर 130 करोड़ हो चुकी है। यानि आज चार गुना बढ़त वही स्कूल जा रहे बच्चों की संख्या 1.92 करोड़ से बढ़कर 24.45 करोड़ हो चुकी है, यानि 14 करोड़ के करीब बढ़ता हो चुकी है। भारत में वर्ष 1951 में कुल स्कूलों की संख्या 2,30,700 थी जो अब बढ़कर वर्ष 2018 में 13,18,530 अर्थात तेरह लाख इक्यासी हजार पांच सौ तीस तक बढ़ गयी है। आज स्कूलों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। गांवों के विकास के साथ ही शिक्षा का भी विकास हो रहा है, आज प्रत्येक एक किलोमीटर की दूरी पर एक प्राथमिक विद्यालय व तीन किलोमीटर की दूरी पर जूनियर स्कूलों को स्थापित किया जा रहा है। शिक्षा की अलख प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा तक पहुंच रही है।

बच्चों की संख्या : तालिका – 2

बच्चें की संख्य	वर्ष 1951	वर्ष 1981	वर्ष 2018
स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्य	1.92 करोड़	7.38 करोड़	25.45 करोड़
लड़कों की संख्या	1.38 करोड़	4.53 करोड़	13.16 करोड़
लडकियों की संख्या	54 लाख	2.85 करोड	12.29 करोड

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, योजना आयोग के आंकड़ों के आधार पर।

उपरोक्त सारणी के आधार पर यदि दृष्टिपाद किया जाये तो हम देखते है कि वर्ष 1951 से लेकर आज तक छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 1951 में स्कूल जाने वाले बच्चें 1.92 करोड़ थे जो आज वर्ष 2018 में यह संख्या बढ़कर 25.45 करोड़ हो गई है। सारणी के आधार पर आज भी लड़कियों की संख्या स्कूल जाने वालों में कम दिखाई दे रही है। यद्यपि आज माता पिता अपने बेटे व बेटियों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं कर रहे है जिसके कारण लड़कियों का शैक्षिक अनुपात निरन्तर बढ़ रहा है।

साक्षरता दर : तालिका – 3

बच्चें की संख्या	वर्ष 1951	वर्ष 1981	वर्ष 2018
साक्षरता प्रतिशत	16.67 %	–	74.40 साक्षर
लड़कों की संख्या	24.95 %	–	82.14 %
लड़कियों की संख्या	7.30%	–	64.46 %

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में आजादी के बाद शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया गया है। जिसके कारण हमारे देश की साक्षरता दर में वृद्धि हो रही है। वर्ष 2018 के अन्त तक 74.40% बालक व बालिका की साक्षरता प्राप्त कर चुके है। वर्ष 1951 में बालक 24.95 % व बालिकाओं की साक्षरता 7.30% थी लेकिन 2018 में बालकों की साक्षरता 82.14 % व बालिकों की 65.46% साक्षरता पायी गयी है।

ड्राप आउट : तालिका – 4

बच्चों की संख्या	वर्ष 1951	वर्ष 1981	वर्ष 2018
प्राथमिक स्तर ड्राप आउट	83.85 %	72 %	4.34 %
लड़कों की संख्या	81.16 %	69.32 %	4.53 %
लड़कियों की संख्या	90.74%	74.14 %	4.14 %
जूनियर स्तर ड्राप आउट	72 %	46.86 %	3.77 %
लड़कों की संख्या	50%	43.32 %	3.09 %
लड़कियों की संख्या	60%	50%	4.49%
सेकंडरी ड्राप आउट	–	–	17.86 %
लड़को की संख्या	–	–	17.93%
लड़कियों की संख्या	–	–	17.79 %
सीनियर सेकंन्डरी ड्राप आउट	73.33%	56.36%	1.54%
लड़को की संख्या	73.06%	53.95%	1.48%
लड़कियों की संख्या	75%	56.36%	1.61 %

2011 की जनगणना के अनुसार ड्राप आउट बच्चे, यानि गरीबी से लेकर लड़की होने तक की वजह से अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाये बच्चे। यह संख्या 10 वी के पहले ही पढ़ाई छोड़ चुके करीब 13 करोड़ बच्चों के रूप में सामने आयी है।

वर्ष 1951 में पांचवी से पहले 83.85 % बच्चें पढ़ाई छोड़ चुके थे, 81.16 लड़के थे और 90.74% लड़कियां पढाई छोड़ चुके थे। आंठवी तक पांचवी से आगे पढाई जारी रखे हुए बच्चों में 72% बच्चें पढ़ाई छोड़ दे रहे थे। 50% लड़के और 60% लड़किया पढाई छोडने वालों में शामिल थे और सीनियर सेकंडरी तक यहां पहुंचने तक 73.33% बच्चों का नाता स्कूल से टूट जाता था। 73.06 और 75 % लड़कियों को स्कूल छोडना पड़ रहा था।

वर्ष 1981 में पांचवी से पहले 72% ड्रॉप आउट बच्चों में 69.32% लड़के और 76. 14% लड़किया पढ़ाई छोड़ चुके थे। आठवी से पहले 46.86% पढ़ाई छोड़ रहे थे। 45.32% लड़के और लड़कियां आठवी से पहले पढाई छोड़ रहे थे और सीनियर सेकेण्डरी तक यहां कुल 56.36% बच्चों का नाता स्कूल से टूटा था। स्कूलों में पढ़ाई जारी रखने में 53.95 लड़के और 56.36 % लड़कियां सक्षम नहीं रह पाये।

वर्ष 2018 में आंकड़ों के आधार पर अब पांचवी से पहले 4.34% पढ़ाई छोड़ने को मजबूर 4.53% लड़के और 4.14% लड़कियां। आंठवी तक आंठवी तक 3.77% पढ़ाई छोड़ चुके होते है, 3.09% लड़के और 4.49% लड़कियां स्कूल की पढ़ाई छोड़ चुके होते हे। इसी प्रकार दसवीं तक 17.68% बच्चें पढ़ाई छोड़ चुके होते है। जिनमें 17.93% लडके और 17.79%

लड़किया पढ़ाई छोड़ चुके होते है तथा 12वीं तक की शिक्षा में 1.54% ड्राप आउट में 1.48% लड़के और 1.615 लड़कियां अपनी शिक्षा पूर्ण करने से पूर्व ही अपने पढ़ायी बीच में छोड़ जाते है।

शिक्षकों की संख्या : तालिका – 5

बच्चों की संख्या	वर्ष 1951	वर्ष 1981	वर्ष 2018
प्राथमिक स्तर	5.38लाख	13.30 लाख	26,70,396 लाख
शिक्षक	4.56लाख	10.21 लाख	–
शिक्षिकाऐं	82 हजार	3.42 लाख	–
जूनियर स्तर	**86** हजार	8.51 लाख	25,59,769 लाख
शिक्षक	73 हजार	5.98 लाख	–
शिक्षिकाऐं	13 हजार	2.53 लाख	–
सेकंडरी स्तर	–	–	19,84,111 लाख
सीनियर सेकंडरी स्तर	1.27लाख	9.26लाख	13,19,295 लाख
शिक्षक	1.07लाख	6.69 लाख	–
शिक्षिकाऐं	20 हजार	2.57 लाख	–
कुल शिक्षक	7.51लाख	31.40 लाख	–
शिक्षक	6.36 लाख	22.28 लाख	–
शिक्षिकाऐं	1.15 लाख	8.52 लाख	–

यदि शिक्षकों की संख्या पर दृष्टि डाली जाये तो हम यह कह सकते हैं कि आज भी शिक्षकों की कमी शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर देखी जा रही है। सरकार द्वारा निरंतर प्रयास करने के बावजूद भी विद्यालयों को इतने शिक्षक नहीं मिल पाये हैं, जितने कि छात्रों की संख्या के आधार पर आवश्यकता है। वर्ष 1951 में प्राथमिक स्तर पर 5.38 लाख शिक्षक थे जो वर्ष 2018 में प्राथमिक शिक्षक 26,70,396 लाख हैं लेकिन फिर भी शिक्षकों की कमी अनुभव की जा रही है। इसी प्रकार सीनियर सेकंडरी 1.27 लाख शिक्षक थे लेकिन वर्ष 2018 में सीनियर सेकंडरी स्तर पर 13,19,295 लाख शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं।

छात्र–शिक्षक अनुपात : तालिका –6

स्तर/वर्ष	वर्ष 1951	वर्ष 1981	वर्ष 2018
प्राथमिक स्तर	1.35	1.54	1.24
जूनियर स्तर	1.36	1.24	1.17
सेकंडरी स्तर	1.12	1.12	1.27

सर्वशिक्षा अभियान के अनुसार प्राईमरी लेवल पर विद्यार्थियों और शिक्षकों का अनुपात 1:30 होना चाहिए, आंठवी के लिए यह 1:35 और 10वीं के लिए 1:30 रखा गया है। भारत ने कागजों में इसे हासिल करने में सफलता पाई है, लेकिन संसद में 2016 में रखी गई रिपोर्ट के अनुसार देश में करीब एक लाख स्कूल ऐसे भी है, जिन्हें अकेले मास्टर साहब को चलाना पड़ रहा है। इस पर सरकार को गहराई से ध्यान देना होगा।

साक्षरता बजट : तालिका – 7

स्तर/वर्ष	शिक्षा बजट	कुल बजट	जीडीपी	खर्च
वर्ष 1950–51	153 करोड	7.8%	0.64%	64.64 करोड़
वर्ष 1999	–	–	4.4%	–
वर्ष 2018	79,685,95 करोड़	–	3.71%	–

साक्षरता बजट वर्ष 1950–51 : 64.64 करोड़ का बजट शिक्षा पर खर्च। यह देश की जीडीपी का 0.64% था। यह आंकडा आज के अनुपात मं 10,080 हजार करोड़ हैं। वही पहल पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिए 153 करोड़ बजट रखा गया था। यह कुल बजट का 7.8% था। वर्ष 2017–18 केन्द्रीय बजट में शिक्षा के लिए 79,685.95 करोड़ का प्रावधान था। जीडीपी का 3.71% है। शिक्षा में जीडीपी का 4.4% तक 1999 में खर्च किया जा चुका है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के शैक्षिक अनुपात पर नजर डालने के बाद भी हम यह देख रहे हैं कि प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की स्थिति खराब होने के लिए हमारा सरकारी तंत्र पूरी तरह से जिम्मेदार है, क्योंकि शिक्षा अधिकारियों द्वारा रिश्वत लेकर सरकारी स्कूलों के पास प्राइवेट स्कूलों की स्थापना की जा रही है। जब तक इन पैंसों की लूटपाट करने वाले स्कूलों को बंद नहीं किया जाता है, तब तक सरकार का शिक्षा के प्रति किया जाने वाला कार्य एक दिखावा ही साबित होगा। इसके लिए ठोस कदम सरकार को उठाने होंगे। माध्यमिक स्तर पर सरकार द्वारा ध्यान देने पर शिक्षा व्यवस्था को सुधारा जा सकता है। शिक्षा के स्तर में सुधार करने के लिये सरकार को छात्रों से ली जाने वाली फीस को कम करना होगा तभी सभी अभिवावक अपने बच्चों को शिक्षा दिला पायंगे। सरकार द्वारा उठाया गया प्राइवेट स्कूलों को बंद करने का फैसला बालकों के भविष्य के लिये सुनहरा अवसर लेकर आयेगा, जो सभी बालकों के लिए एक समान शिक्षा के अवसर प्रदान करने वाला होगा। इसके माध्यम से शिक्षा सही मार्ग की ओर अग्रसर होगीं।

सन्दर्भ

1 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, योजना आयोग के आंकड़ों के आधार पर।
2 26.01.2018 अमर उजाला
3 2011 की जनगणना के अनुसार।
4 14 अगस्त 2017 अमर उजाला हल्द्वानी।
5 योजना पत्रिका सितम्बर (2018) नई दिल्लीः लोधीरोड।
6 सक्षमता आधारित मानक सामग्री 2017
7 प्रतियोगिता दर्पण माह– मार्च 2018
8 हिन्दुस्तान दर्पण माह– मार्च 2018